विचार बिन्दु

संसार में छल, प्रवंचना और हत्याओं को देखकर कभी-कभी मान लेना पड़ता है कि यह जगत ही नरक है। –जयशंकर प्रसाद

अखबारों में छपी बलात्कार की रिपोर्टें क्या झूठी और विश्वास योग्य नहीं?

काफी समय से प्रिंट मीडिया में महिलाओं के प्रति घटित बलात्कार व अन्य अपराधों की सूचनाएँ बहुधा छपती रहती हैं। पाठक इन्हें पढ़कर सोचते हैं कि हम कहाँ किस समाज में और किन परिस्तिथिओं में रह रहे हैं? आंकड़ों सहित एक खबर के अनुसार राजस्थान अन्य प्रदेशों की तुलना में महिलाओं के प्रति अपराधों में सबसे ऊपर दर्ज हुआ है। यह एक सर्वे रिपोर्ट थी। जिसमे जिलेवार ऐसे अपराधों की संख्या की खबर छप चुकी है इसके लिए क्या किसी ने मुख्यमंत्री जी को दोषी ठहराया है? जिससे उन्हें यह वक्तव्य देना पड़ा कि 56 प्रतिशत मामले झूंठे हैं, और विरोधी लोग ऐसी बातें फैलाते रहते हैं। काश उनका कथन सही निकले। मेरी समझ से मुख्य मंत्री एक संबेदनशील व्यक्ति हैं फिर भी यदि दुष्कर्म के मामले कोर्ट तक पहुंच चुके हैं अथवा पुलिस में प्रथम रिपोर्ट दर्ज हो चुकी है तो न्यायालय से वस्तु स्तिथि शीघ्र स्पष्ट हो जायेगी कि दुष्कर्म का मामला सही है अथवा झूंठा? वर्तमान में न्यायलय भी झूंठे मामलों में सख्त रूख अपनाने लगे हैं और शिकायतकर्ता को ही लताड़ के साथ जुर्माना लगा देते हैं।

इसके पलट भी एक सामजिक पक्ष है कि पीड़ित महिला व उसका परिवार समाज में बदनाम होने के डर से मुंह बंद कर लेते हैं और पुलिस तो क्या, समाज में भी किसी को कुछ भी नहीं बताते जैसे कुछ हुआ ही न हो। इसलिए अधिकांश वे अपराध झूंटे तो नहीं कहे जा सकते, यदि वे सार्वजनिक मीडिया में प्रकाशित नहीं किये गए हैं। और यदि प्रकाशित हो चुके हैं तो स्तिथि जल्द स्पष्ट हो जायेगी, कि झूंटे हैं अथवा सही।

अभी तक तो भारतीय समाज चाहे वो किसी धर्म से सम्बंधित हो, समाज में बदनामी के डर से कही अधिक खौफ खाता है और बलात्कार के मसले को रिपोर्ट नहीं करता और न ही परिवार या समाज में उसकी बात करता है, ऐसा केवल बदनामी के डर से और कुंवारी लड़की के विवाह में विघ्न उत्पन्न होने के डर से। इसलिए कोई भी विवेकशील व्यक्ति झूठे मामले के कथन को आसानी से स्वीकार नहीं कर सकता। अत: बिना किसी द्वेष व् पूर्वाग्रह के मैं किसी पर कोई आक्षेप नहीं लगा रहा। मुख्य मंत्री का भी आशय कि विरोधी पार्टी बदनाम करने के लिए इस तरह के झूंटे प्रचार करते रहते हैं, सच भी हो सकता है। उनके इस राजनैतिक वक्तव्य पर मुझे कुछ नहीं कहना। यदि सम्बंधित अखवार उनके वक्तव्य पर कुछ सफाई दे तो उसकी मर्जी।

फिर भी एक प्रतिष्ठित व्यक्ति को ऐसे सामाजिक सम्बेदंशील मसलों पर तुरंत किसी विपरीत प्रर्तिक्रिया से बचना चाहिए। और यदि कुछ सच्चाई लगे भी, तो आवश्यक कदम शीघ्र उठाने की मंशा जाहिर करना कही अधिक अपेक्षित रहता है।

कुछ समय पूर्व मेरे दो लेख 'बलात्कार' और 'दुश्चिरत्र' लोगों पर इसी अखवार में और समता सन्देश में छपे थे। आशा की थी की कोई प्रतिक्रिया कहीं से मिलेगी, लेकिन नहीं मिली। महिला आयोग से भी नहीं, जो अपने को महिलाओं के अधिकारों का रक्षक मानता है।

मैं पूर्व में भी बलात्कार पर इसी अखवार में सम्पादकीय लिख चुका हूँ। कतिपय अन्य अखबारों में भी मेरे वही विचार छपे, परतु कहीं से भी कोई प्रतिक्रिया नहीं हुयी। कारण बहुत स्पष्ट है कि शासन, सरकार और मानव अधिकारों से सम्बंधित सभी अफसर व संस्थाये महिलाओं व विशेष रूप से अबोध बच्चिओं के प्रति जधन्य से जघन्य अपराध होने पर भी बोध शून्य हो जाते हैं और कभी भी उस घटना का संज्ञान लेते नहीं दिखाई देते। अत: सरकार ऐसी संस्थाओं पर जो धन व्यय करती है वह व्यर्थ फ़िज़ूलख़र्ची है, अपनों को केवल वित्तीय लाभ देने के लिए, अन्य कुछ भी नहीं। सरकार चाहे किसी पार्टी की हो ये व्यवस्थाएँ नित चलती रहती हैं, और जनता के टैक्स की समुचित बंदर बाँट होती रहती है। समाज सेवी श्री अन्नाहजारे की लोकपाल की मांग यदि पूर्ण हो जाती तो जनता ऐसी लूट/डकैतों की संस्थाओं को कभी का आसमान के तारे दिन मे दिखा देती। प्रत्येक शासन में ऐसी फ़िज़ूल की संस्थाएं सदैव फलती–फूलती रहती हैं। इसलिए ऐसे चोर डाकुओं से निपटने के लिए मिलिट्री शासन कुछ वर्षों के लिए आवश्यक है, अन्यथा व्यवस्थाएं वर्तमान शासन–प्रशासन के रहते बदल नहीं सकती। अपनी बिना मेहनत कमाई को कैसे कोई ध्वस्त होते देख सकता है?

कुछ समय पूर्व मेरे दो लेख 'बलात्कार' और 'दुश्चिरत्र' लोगों पर इसी अखवार में और समता सन्देश में छपे थे। आशा की थी की कोई प्रतिक्रिया कहीं से मिलेगी, लेकिन नहीं मिली। महिला आयोग से भी नहीं, जो अपने को महिलाओं के अधिकारों का रक्षक मानता है। मैंने सुझाव दिया था कि बलात्कारी को बधिया (नसबंदी नहीं बल्कि अंडकोष से दोनों बृषण निकलवा देना) कर छोड़ दिया जाय, जैसा गाय–भैंसों के नर पशुओं में एक सतत बिधि है उनकी ऊर्जा को खेती के कार्य में उपयोग में लेने के लिए। अन्य सजाएँ अपराधी को तभी दी जाय जब उसने बलात्कार के साथ हत्या व अन्य अपराध भी किया हो। मैं पशुपालन व डेरी का विद्यार्थी रहा हूँ और मैंने ये सभी बिधाएँ खुद सीख कर की भी और महाविद्यालय के पशु फार्मों पर करवाई भी।

बधिया करने के अनेक लाभ हैं। कारागृहों पर बोझा घट जायेगा और उन पर खर्चा भी। न्याय शीघ्र हो सकेगा और अपराधी अपेक्षाकृत कुछ ही दिनों में अपने घर लौट कर कामकाज में व्यस्त हो सकेगा। लेकिन समाज में सर ऊंचा कर नहीं चल सकेगा। उसे देख अन्य लोग सबक ले सकेंगे। दूसरी तरफ अपराधी व्यक्ति को कोई शारीरिक क्षति नहीं होगी बल्कि वह सभी कार्य करने में सक्षम रहेगा, केवल स्त्री से शारीरिक सम्बन्ध अथवा मैथुन नहीं कर सकेगा।

यह दंश वह जीवन पर्यन्त उसी प्रकार भोगेगा जैसे पीड़ित महिला समाज में लोगों विशेष रूप से महिलाओं के अप्रत्यक्ष ताने/ चुभते आक्षेपों को बर्दास्त कर जीवन यापन करेगी। सरकार और न्यायलय को इसमें क्या आपत्ति है ? इसे वे क्यों नहीं अमल में लाना चाहते? सरकार और महिला आयोग इस पर शीघ्र क़ानून की अनुशंसा क्यों नहीं करती? मुझे याद है मद्रास हाई कोर्ट ने काफी समय पहले किसी मामले में ऐसी सोच व्यक्त की थी।

साथ ही ऐसे अपराध संज्ञान लेने वाले अफसरों के बच्चो पर नहीं घटते, उनके घर की महिलाये ऐसे अपराधों से सदैव सुरक्षित रहती हैं इसलिए उन्हें दूसरे का दर्द कैसे भासित हो? फिर भी अबोध बच्चिओं एवं महिलाओं के सामजिक व शारीरिक उन्नयन के वास्ते मैं एक अध्यापक की दृष्टि से राजस्थान के सम्पूर्ण विधायक और विशेष रूप से माननीय मुख्य मंत्री जी से आग्रह करता हूँ कि वे इस सामाजिक उत्पीड़न के समूल नाश के लिए मेरे द्वारा सुझाये समाधान को क़ानून बना कर प्रदेश की आधी आबादी के प्रति जघन्य अपराध से मुक्ति दिला कर देश में एक उदाहरण प्रस्तुत करे और यश के भागीदार बने।

मुख्य बात जो मुझे दृढ़ता से कहनी थी वह मैंने लिख दी। अब जिन अन्य को कुछ करना चाहिए वे इस पर जनता व पीड़ित महिला के हित में अबिलम्ब क़ानून बनवा कर प्रावधान लागू करवाने का बीड़ा उठायें।

–अतिथि सम्पादक,
प्रो. डॉ. वीर बहादुर सिंह,
(पूर्व कुलपति एवं डेयरीविज्ञ महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी वि.वि., उदयपुर)

राशिफल बुधवार 7 सितम्बर, 2022

पंडित अनिल शर्मा

भाद्रपद मास, शुक्ल पक्ष, द्वादशी तिथि, बुधवार, विक्रम संवत 2079, उत्तराषाढ़ा नक्षत्र सांय 4:00 तक, शोभन योग नत्रि 1:15 तक, बव करण दिन 1:35 तक, चन्द्रमा मकर राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य–सिंह, चन्द्रमा–मकर, मंगल–वृष, बुध–कन्या, गुरू–मीन, शुक्र–सिंह, शनि–मकर, राहु–मेष, केतु–तुला राशि में।

आज जल झूलनी एकादशी व्रत वैष्णवों का है। आज श्री वामन जयन्ती, हरिवासराभाव, भुवनेश्वरी जयन्ती है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: लाभ–अमृत सूर्योदय से 9:14 तक, शुभ 10:52 से 12:25 तक, चर 3:31 से 5:04 तक, लाभ 5:04 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 12:00 से 1:30 तक। सूर्योदय 6:12, सूर्यास्त 6:37

मेष

व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक अड़चनें दूर होने लगेंगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में धार्मिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

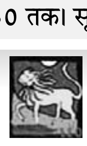

सिंह

व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता अभी यथावत बनी रहेगी। नौकरीपेशा व्यक्तियों को महत्वपूर्ण जिम्मेदारी मिल सकती है। आर्थिक मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है।

धनु

व्यावसायिक कार्यों से संबंधित आर्थिक समस्या का समाधान हो सकता है। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। चलते व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। परिवार में धार्मिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

वृष

धार्मिक–सामाजिक समारोह में भाग ले सकते हैं। धार्मिक स्थान की यात्रा का कार्यक्रम बन सकता है। नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। व्यावसायिक आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कन्या

व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। नवीन कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। धार्मिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

मकर

मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मन:स्थिति में सुधार होगा। व्यक्तिगत समस्याओं और भागदौड़ से राहत मिलेगी। आर्थिक मामलों से संबंधित शुभ संदेश प्राप्त होंगे। धार्मिक कार्यों में आस्था बढ़ेगी।

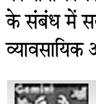

मिथुन

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। यात्रा में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है।

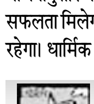

तुला

घर–परिवार के कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी और अतिथियों के आगमन से आवश्यक कार्यों को टालना पड़ सकता है। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

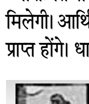

कुंभ

व्यक्तिगत कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। व्यक्तिगत और घर–परिवार के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। मन में असंतोष बना रहेगा। खान–पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है।

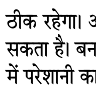

कर्क

व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। घर–परिवार में सुख–सुविधाएं बढ़ेगी और मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

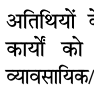

वृश्चिक

व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा है। अपने अति आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में शुभ संदेश प्राप्त होंगे।

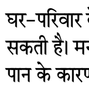

मीन

आर्थिक/वित्तीय मामलों में संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा। अटका हुआ धन प्राप्त हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। परिवार में धार्मिक मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

उत्तम तप धर्म के पालन से पवित्रता आती है

'इच्छानिरोधस्तप:' अर्थात इच्छाओं का निरोध/अभाव/नाश करना, तप है। वह तप जब आत्मा के श्रद्धान सहित/पूर्वक होता है, तब 'उत्तम तप धर्म' कहलाता है।

विषय कषायों का निग्रह करके तप में चित्त लगाना 'उत्तम तप' धर्म है,तप धर्म का प्रमुख उद्देश्य चित्त की मलिन वृत्तियों का उन्मूलन है।

उत्तम तप धर्म अर्थात अपनी शक्ति अनुसार सात तत्वों जीव, अजीव, आस्त्रव, बांध, संवर, निर्जरा और मोक्ष का सम्यक ज्ञान पूर्वक अपनी इच्छाओं का निरोध करते हुए कर्मों की निर्जरा करना उत्तम तप है।

जो मनुष्य मनसहित पंच इंद्रियों को वश में करके, इंद्रियों के विषयों से विरक्त होता है, समस्त परिग्रहों को छोडता है, कर्म बंध करने वाली राग द्वेष मयी प्रवृत्ति को छोड़ता है, वही उत्तम तप कहलाता है ।

विषमता में समता धारण करना, परिग्रह मैं ममता को छोड़ना, कायरता को छोड़ धीर वीर बनना, किसी के प्रति राग द्वेष नहीं करना, नीरस आहार संकलेश रहित लेना, पंच समिति का पालन करना, मन, वचन और काय को चलायमान नहीं करना, धर्म सहित समय व्यतीत करना, अभिमान छोड़ विनय पूर्वक व्यवहार करना, कपट छोड़ सरल परिणाम धारण करना, क्रोध छोड़ क्षमा ग्रहण करना, लोभ छोड़ संतोषी होना आदि ये सभी तप के उदाहरण हैं ।

कर्म छायार्थ तप्यय इती तप: । कर्मो का क्षय करना तप है ।

प. दोलतराम जी ने लिखा है कि तप की महिमा अपरंपार है मुक्ति जब भी मिलेगी तपस्या से ही मिलेगी ।

रावण ने तप विद्या सिद्धि के लिए किया था वह आत्म शुद्धि के लिए करता तो उसी भव से मोक्ष चला जाता।

तप धर्म की परिभाषा करते हुए आगे दिगम्बराचार्यों ने कहा कर्मक्षयार्थ

तप्यते इति तप: जो कर्म–क्षय के लिए तपा जाता है, वह तप है।

चमकना है तो तपो जो तप जाता है, वह चमक जाता है। स्वर्ण– पाषाण को तपाने से ही शुद्ध स्वर्ण की प्राप्ति होगी। जैन साधक इसी तरह से शक्तिनुसार तप की पालना करते है । तपाग्नि में तपे बिना कर्मक्षय असंभव है ।

अंतरंग तप के 6 भेद हैं – प्रायश्चित, विनय, वैय्यावृत्य, स्वाध्याय, व्युत्सर्ग और ध्यान ।

बहिरंग तप के भी 6 भेद हैं –

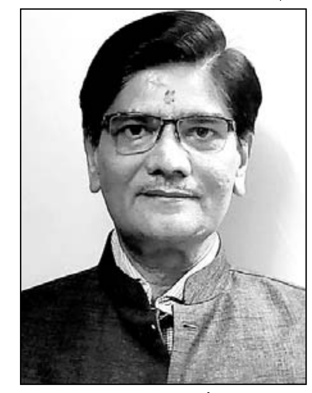

सुभाष चंद्र जैन

अनशन, अवमौदर्य, वृत्ति–परिसंख्यान, रस–परित्याग, विविक्त–शैय्यासन, काय–क्लेश। बहिरंग का तात्पर्य जो दिखने में आते हैं। अंतरंग तप यानी जो सामान्यत: दिखने में नहीं आतें।

छह बाह्य/बहिरंग तप है –

1. **अनशन:** बिना किसी अपेक्षा के संयम की सिद्धि, राग के उच्छेद एवं इन्द्रियों को वश में करने के उद्देश्य से अन्नजल का पूर्ण त्याग करना।

2. **अवमौदर्य:** संयम जाग्रत रखने, प्रमाद के परिहार के लिए, स्वाध्याय एवं ध्यान की सिद्धि के लिए भूख से कम खाना।

3. **वृत्ति परिसंख्यान :** भाग्य की परीक्षा एवं राग–द्रेष के अभाव के लिए मुनिराज दिन में एक ही बार आहार लेते है एवं निराहार भी रहते है ।

4. **रस परित्याग:** इंद्रियों के दर्प को नष्ट करने हेतु, निद्रा विजय के लिए घृतादि छह रसों में से त्याग करना.

5. **विविक्त शैयासन:** एकांत में एवं निर्जन्तुक घर, मंदिर, धर्मशाला, गुफा आदि स्थानों में

निर्बाध ब्रह्मचर्य, स्वाध्याय, ध्यान की सिद्धि के लिए विविक्त शैयासन तप किया जाता हैं।

6. **कायक्लेश तप :** वृक्षमूल योगादि शीत गर्मी की बाधा को सहन करना, शरीर को कष्ट देना। साधुओं को ये छहों तप करना चाहिए।

ये छहों तप निम्न अंतरंग तप के लिए साधन हैं।

1) प्रमाद एवं अन्य दोषों का परिहार करना प्रायश्चित है।

2) पूज्य पुरूषों का आदर करना विनय तप है।

3) साधर्मी की सेवा करना वैयावृत्ति तप है।

4) आलस्य का त्याग करके ज्ञान की आराधना करना स्वाध्याय तप है।

5) अहंकार/मान का त्याग करना व्युत्सर्ग है एवं

5) चित्त के विक्षेप का त्याग करना ध्यान तप है।

इस प्रकार से बारह प्रकार का तप कर्म–क्षय का कारण हैं। तप सुप्त चेतना को जागृत करने वाला हैं।

शरीर को प्रमादी न बनने देने के लिये बहिरंग तप किये जाते हैं और मन की वृत्ति आत्म–मुख करने के लिये अन्तरंग तपों का विधान किया गया है। दोनों प्रकार के तप आत्म शुद्धि के अमोध साधन हैं। तप के प्रभाव से किसी भी वातावरण में जैन साधक आत्म–साधना के लिये तत्पर रहते है ।

संयम की सिद्धि, राग का उच्छेद, कर्मों का नाश, ध्यान और आगम की प्राप्ति के लिए तप धारण किया जाता है। समतामय जीवन जीना ही तपस्वी की पहचान है। सच्चा तपस्वी साधनों से नहीं साधना, तप करके खुश होता है। तपस्या के बाद विशुद्धि बढ़ती है ।

रुचि से, मन से, लगन से, अंतरभावना से किया जाने वाला तप कठिन नहीं लगता है और सन्मार्ग प्रशस्त करता है ।उत्तम तप निर्वांछित पाले, सो नर करम– शत्रु को टाले।

सुभाष चंद्र जैन,
पूर्व सहायक महा प्रबंधक
एसबीआई

साक्षरता कार्यक्रम में कॉपी–पेंसिल और प्रवेशिका को नहीं मिला स्थान

आजादी के अमृत महोत्सव में शत–प्रतिशत साक्षरता की सोच होनी चाहिए । आजादी के समय देश में 86 प्रतिशत लोग असाक्षर थे। 2011 की जनगणना में 74 प्रतिशत साक्षरता दर दर्ज की गई। राजस्थान में अभी भी 35 प्रतिशत लोग असाक्षर है, जिन्हें साक्षर बनाने के लिए सम्पूर्ण साक्षरता अभियान के बाद 2009 में साक्षर भारत कार्यक्रम और बाद में पढ़ना–लिखना अभियान संचालित किया गया। शत प्रतिशत साक्षरता हासिल करने का लक्ष्य 2030 तक का रखा गया है।

राजस्थान 1991से 2001 के बीच निरक्षरता उन्मूलन के लिए जोरदार प्रयास किए और हमारी साक्षरता मात्र 38.55 प्रतिशत से 61.03 प्रतिशत तक पहुँच गई।

राजस्थान को भारत सरकार के भरोसे नहीं रहकर अपनी अलग पहचान कायम करनी चाहिए। राजस्थान के पास साक्षरता आंदोलन का अनुभव है, प्रशिक्षित टीम और सरकारी–गैर सरकारी मजबूत ढांचा तैयार हुआ जिसका भरपूर उपयोग करने की कोशिश हो।

भारत सरकार की साक्षरता योजनाओं के भरोसे पर न बैठकर हमारे प्रदेश की भौगोलिक परिस्थियों के अनुसार कार्य योजना का निर्माण करें जबकि बड़ी बात यह है राजस्थान ही एक ऐसा राज्य है जिसके पास साक्षरता अभियान के लिए प्रशिक्षित एवं सरकारी संसाधन उपलब्ध हैं बावजूद भी इस चुनौती को स्वीकार करने की बजाय हम केवल भारत सरकार के भरोसे हाथ पर हाथ धरे बैठे हुए हैं ।

आजादी के समय भारत की साक्षरता प्रतिशत शोचनीय स्थिति में थी आजादी के 75 साल बाद

आज भी भारत में निरक्षरता का बोलबाला देखा जा सकता है। आजादी के बाद देश में निरक्षरता उन्मूलन के

राजेन्द्र जोशी

लिए दशक दर दशक अनेक अभियान चले , सबसे बड़ा अभियान तो सम्पूर्ण साक्षरता अभियान, उत्तर साक्षरता अभियान और सतत शिक्षा कार्यक्रम आयोजित किए गए। आजादी के अमृत महोत्सव में ठोस और प्रभावी कार्यक्रम बनाकर हार्डकौर असाक्षरों को साक्षर किया जाए तो हम शत प्रतिशत साक्षर देश की श्रेणी में शामिल हो सके। विकसित देश बनाने के लिए साक्षर होना होगा।

शिक्षाविदों ने सोचा था की 75 साल बाद एक बार फिर से देश में शत प्रतिशत साक्षरता के लिए आंदोलन चलाया जाएगा।

नई शिक्षा नीति में प्रौढ़ शिक्षा पाठ्यक्रमों के लिए सार्वजनिक पुस्तकालय स्थान जहाँ तक संभव हो आईसीटी से सुसज्जित एवं सामुदायिक भागीदारी नाम पर कुछ पन्ने डालें जब परियोजना सामने आई तो उसमें साक्षरता अभियान के लिए कॉपी पेंसिल आईपीसीएल को कोई स्थान नहीं मिला।

नवभारत साक्षरता नाम से एक परियोजना भारत सरकार ने बनाई है। जिसकी रूपरेखा में पढ़ने वाले असाक्षरों को कॉपी–पेंसिलऔर प्रवेशिका की जगह कंप्यूटर से शिक्षित होने का निर्देश दिया गया है। कंप्यूटर से शिक्षित करने के लिए स्वयंसेवकों के रूप में स्कूल के विद्यार्थियों को जिम्मेदारी दी गई है।

यह विद्यार्थी वह है जो खुद अभी कंप्यूटर साक्षरता में पारंगत होना बाकी है। पहले इन्हें कंप्यूटर साक्षरता में पारंगत किया जाएगा फिर असाक्षरों को कंप्यूटर से साक्षर करने का काम किया जाएगा।

यह परियोजना हास्यास्पद लगती है कि जिस देश के सभी गांवों में बिजली नहीं है, अगर किसी स्कूल में कंप्यूटर है तो वहां कंप्यूटर अनुदेशक नहीं है। स्कूल में स्थापित कंप्यूटर लैब के माध्यम से प्रोढो को साक्षर करने की परिकल्पना की जा रही है परंतु असाक्षरों को सीधे कंप्यूटर से साक्षर करने कि यह परियोजना कहां तक सफल होगी।

राजेन्द्र जोशी,
वरिष्ठ साहित्यकार

वॉर्डवासियों ने जलदाय विभाग कार्यालय पर जड़ा ताला

चूरू, (कासं)। शहर में पेयजल आपूर्ति ठीक से नहीं होने के कारण शहर के अधिकांश वार्डों में पिछले कई दिनों से पानी सप्लाई बाधित हो रही है। शहर के अधिकांश ट्यूवेल खराब पड़े हैं और पूरे शहर में पानी सप्लाई में गंदा पानी आ रहा है, जिसके कारण से आधे से ज्यादा शहर बीमार पड़ा है।

मंगलवार को बड़ी संख्या में वार्ड 33 के महिला–पुरुषों ने भाजपा नेता भंवर गुर्जर के नेतृत्व में जलदाय विभाग के अधीक्षण अभियंता कार्यालय के आगे धरने पर बैठ गये और कार्यालय के ताला जड़ दिया।

वार्ड के लोगों में आक्रोश इतना था कि तीन घंटे तक लगातार नारेबाजी कर विरोध प्रदर्शन करते रहे । आखिर में एतिहात के तौर पर जलदाय विभाग के अधिकारियों को पुलिस बुलानी पड़ी। मामले की गंभीरता को लेकर पूर्व जिला प्रमुख हरलाल सहारण, प्रधान दीपचंद राहड़, उप जिला प्रमुख महेंद्र न्यौल भी धरने स्थल पर पहुंचकर धरने को संबोधित किया।

इस अवसर पर पूर्व जिला प्रमुख हरलाल सहारण ने कहा कि यदि आने वाले समय में यही स्थिति रही तो सैकड़ों नहीं हजारों की संख्या में विधायक राजेंद्र राठौड़ के नेतृत्व में बड़ा आंदोलन कर इस सरकार को सबक सिखाया जाएगा। प्रधान दीपचंद राहड़ ने आरोप लगाते हुए कहा कि जलदाय विभाग ने जब से नई कंपनी को ठेका दिया है, तब से शहर के यही हाल हैं। ठेकेदारों की गलती के कारण अधिकांश ट्यूवेल बंद पड़े हैं।

उल्लेखनीय है कि यहां की आवासन मंडल कोलोनी में भी गंदा पानी आने की शिकायत लगातार मिल रही है।

इसी के साथ पंप हाऊस पर तैनात कर्मचारी अपनी मनमर्जी से पानी की सप्लाई खोलता है। कई दफा दो दिन तक पानी नहीं खोलता जिसके कारण

जलदाय विभाग कार्यालय के ताला लगाने वाले प्रर्शनार्थियों को पूर्व जिला प्रमुख हरलाल सहारण, प्रधान दीपचंद राहड़ ने संबोधित किया

लोगों को काफी परेशानी का सामना करना पड़ता है। इस दौरान शांति नगर के लोगों ने बोतलों में गंदा पानी भरकर अधिकारियों के सामने प्रदर्शन किया। इस अवसर पर भाजपा नेताओं व जलदाय विभाग के अधीक्षण अभियंता व सिटी एईन मेजर खान के बीच हुई वार्ता हुई।

अधिकारियों के आश्वासन के बाद धरना समाप्त कर दिया गया। वार्ता में एईन मेजर खान ने बताया कि आगामी 20 दिनों के अंदर नये ट्यूवेल खुदाई कर इस समस्या का अति शीघ्र ही समाधान कर दिया जाएगा। इस अवसर पर दर्जनों लोग उपस्थित रहे ।

हजारों श्रद्धालुओं ने प्रभु के विग्रह स्नान के दर्शन किए

राजसमंद, (निसं)। जल झूलनी एकादशी पर धर्मनगरी चारभुजा गढ बोर में आस्था का सैलाब उमड़ पड़ा । जहां हजारों श्रद्धालुओं ने प्रभु के विग्रह स्नान के अलौकिक दृश्य को निहारा। मंगलवार को ठाकुरजी की राम रेवाड़ी

■ जयकारों के साथ गुलाल से सराबोर हुई चारभुजा नगरी

निकालने से पूर्व सोमवार से ही मंदिर में श्रद्धालु कतारबद्ध हो गए। हजारों की संख्या में श्रद्धालुओं की भीड़ से पूरा मंदिर चौक खचाखच भर गया। व्यवस्था को लेकर तैनात पुलिस जाप्ते ने चौक की व्यवस्था को संभाले रखा।

राम रेवाडी निकालने से पूर्व प्रभु श्री चारभुजानाथ के राजभोग आरती हुई। इस दौरान करीब आधे घंटे के लिए दर्शन बंद रहे । ठाकुरजी की सोने की पालकी को सजाया। करीब सवा 12 बजे ठाकुरजी की बाल प्रतिमा को सोने की पालकी में बिराजित किया गया। इसके बाद बैण्ड बाजों की धुन व शहनाइयों की स्वर लहरियों व घणी खम्मा व छोगाला छैल के जैकारों के बीच ठाकुरजी की वैवाण को मंदिर चौक में उतारा गया। जहां मौजूद श्रद्धालुओं ने अबीर गुलाल की छटा बिखेर कर ठाकुरजी के समक्ष नतमस्तक हुए। दूध तलाई पहुंचे के

सोने की पालकी में बाल स्वरूप में बिराजे ठाकुरजी के लाखों श्रद्धालुओं ने दर्शन किए।

बाद ठाकुरजी को तलाई स्थित छतरी में बिराजमान करवाया। दही का भोग धराने के बाद अमल का भोग धराया। इसके बाद राजावत परिवार द्वारा बाल प्रतिमा को केवडे में लिपटा कर माथे पर रखकर स्नान कराने के लिए प्रस्थान किया। इसके बाद परम्परागत पुजारियों ने ठाकुरजी के विग्रह के साथ दो बार दूध तलाई की परिक्रमा पूरी की। पुजारी व भक्तगण भजन कीर्तन करते हुए शाम 6 बजे मंदिर पहुंचे। जहां प्रभु की बाल प्रतिमा की आरती उतार कर गर्भ ग्रह में प्रतिस्थापित करवाया। इस बार जलझूलनी मेले में करीब 1 लाख श्रद्धालुओं के ठाकुरजी के दर्शनार्थ पहुंचने का अनुमान लगाया जा रहा है। वहीं राज्यसभा सांसद व कुंवारिया निवासी लहर सिंह सिरौया ने भी चारभुजा पहुंच ठाकुरजी के दर्शन किए। पुजारी नाथूलाल गुर्जर ने बताया कि उन्होंने रेवाडी में 1 किलो सोना भेंट किया जो देवस्थान में दर्ज कर रसीद प्राप्त की। वही कुंभलगढ़ विधायक सुरेंद्र सिंह राठौड भी जलझूलनी मेले में शामिल हुए।